

Ferdinando Frega – Nando the Scribe

GENNARO HOT DOG



Gillettenarrative.com

जिलेट और जेन्नारो हॉट डॉग

जिलेट ट्रेलर 18 — नांदो, लेखक

अब भी \$1।

मैं बस से उतरा और उस पते की ओर चलने लगा जहाँ मुझे रहना था।

इतालवी मुँह से निकलता मेरा अमेरिकी लहजा गलत सुनाई देता था।

मैं पसीने में तर था।

मुझे अपना आप गंदा लग रहा था।

सुबह-सवेरे का मैनहैटन सच बोलता है।

कचरे की गाड़ियाँ अभी गुज़री नहीं थीं।

सड़कों पर अब भी पिछली रात की गंध थी।

ज़्यादातर लोगों को वह गंध घिनौनी लगती।

मुझे उसमें घर की महक आई।

वहाँ पहुँचने में मुझे 61 साल लगे।

कुसूर फ़ेडेक्स से जुड़े उस सारस का है जिसने डिलीवरी में ग़लती की और मुझे दक्षिणी इटली में गिरा दिया।
ग़लत पता।

अब मेरा शरीर आख़िरकार मेरे मन के बराबर पहुँच रहा था।

न्यूयॉर्क सिटी चुपचाप मेरा इंतज़ार करता रहा था।

फिर मैंने उसे देखा।

हॉट डॉग का एक ठेला।

और उसी पल मैं जान गया: मैं घर आ गया था।

मैं पास गया। मालिक बूढ़ा था। इतालवी। नेपल्स का। एकदम सही।

उसने फ़ौरन अपना नाटक शुरू कर दिया।

“मैं थक गया हूँ।”

“मैं बूढ़ा हो गया हूँ।”

“मेरे पास पैसा नहीं है।”

“मेरे बच्चे बहुत ज़्यादा हैं।”

“मैं यह धंधा बेचना चाहता हूँ।”

मैंने उसे रोका। “ठेले का कितना?”

उसने मुझे घूरा। “पैसे की बात से पहले... यह बताओ कि तुम हो कौन बला।”

ठीक बात। हम कॉफ़ी पीने गए। फिर दोपहर का खाना। फिर और बातें। घंटे बीत गए, पर उसने एक बार भी घड़ी नहीं देखी।

एक मौक़े पर मैं मुस्कुराया और बोला: “अमेरिका में हमेशा कहते हैं कि वक्रत ही पैसा है।”

वह हँसा। “नहीं।” फिर उसने सीधे मेरी ओर देखा। “वक्रत के बाद... दिल ही पैसा है।”

हम दोनों मुस्कुराए। पर मैं फ़ौरन समझ गया कि यह मज़ाक़ नहीं था।

अगली सुबह हम सिटी हॉल में मिले। वह अपनी पत्नी के साथ आया। फिर उसकी बेटी। फिर उसकी बहन। फिर उसकी भाभी। तब तक यह कारोबारी सौदा कम और उस परिवार में मेरा ब्याह ज़्यादा लगने लगा था।

मुझे अब भी अंदाज़ा नहीं था कि ठेले के लिए वह क्या चाहता है। मैंने \$35,000 नक़द तैयार रखे थे। उम्मीद थी कि इतना काफ़ी होगा।

सब पर दस्तख़त हो गए। काम ख़त्म।

फिर उसने मेरी ओर देखा और कहा: “तुम्हारे पास कितना पैसा है?”

मैंने वैसे जवाब दिया जैसे समझदार लोग ख़तरनाक सवालियों का जवाब देते हैं: “मुझे नहीं पता। मैंने गिना नहीं। बस बता दीजिए कि मुझे आपको कितना देना है।”

वह मुस्कुराया। “एक डॉलर।”

सन्नाटा। कोई नहीं हिला। कोई नहीं बोला।

फिर उसने कहा: “अमेरिका में स्वागत है।”

उस दिन मैंने वह बात सीखी जो ज़्यादातर लोग कभी नहीं समझते।

कुछ आदमी धंधे बेचते हैं। कुछ विरासत सौंपते हैं।

पहले साल भर मैंने हर हॉट डॉग एक डॉलर में बेचा।

इज़ज़त की खातिर। याद की खातिर।

क्योंकि कुछ आदमी खरीदे नहीं जा सकते। उनका बस सम्मान किया जा सकता है।

नांदो